आयोजन नेपा लिमिटेड में बलिदानियों के जीवन चरित्र पर संवाद परिसंवाद कार्यक्रम में ज्ञानेश्वर खैरनार ने कही यह बात

'देश के लिए अपने आप को न्यौछावर करने वालों को भूला नहीं जा सकता'

नईदुनिया संजय चौहान 9406689018

नेपानगर (नईदुनिया प्रतिनिधि)। नेपा लिमिटेड में जनजातीय गौरव दिवस के शृंखलाबद्ध कार्यक्रम के अंतर्गत भारत के आदिवासी बलिदानियों के जीवन चरित्र पर एक संवाद- परिसंवाद कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

नेपा लिमिटेड के जनसंपर्क अधिकारी संदीप ठाकरे ने बताया कि परिचर्चा में शहीद वीर नारायण सिंह, भगवान बिरसा मुंडा, अल्लूरी सीताराम राजू, रानी गाइदिनल्यू पैसे, रानी दुर्गावती, टंट्या मामा भील, शहीद भीमा नायक इत्यादि वीर आदिवासी योद्धाओं के जीवन चरित्र और उनके द्वारा अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध चलाई गई क्रांति के विषय में संवाद परिसंवाद एवं प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम किया गया।

वरिष्ठ प्रबंधक कार्मिक एवं प्रशासन ज्ञानेश्वर खैरनार ने बताया कि भारत में कई आदिवासी समुदाय हैं। जिन्होंने अपने लोगों और क्षेत्र को बचाने एवं अंग्रेजों को भगाने के लिए विद्रोह किया है। लेकिन आज उनके नाम गुमनामी में खो गए हैं। यह वे सेनानी थे जिन्होंने देश के लिए अपने आप को न्योछावर तक कर दिया है। उनका यह समर्पण भूला नहीं जा सकता। उन्हें याद कर आने वाली पीढ़ी के सामने रखना आवश्यक है।

उन्होंने बताया कि विद्रोह 1857 का हो या स्वतंत्रता आंदोलन 1946 का हो। कई सेनानी इसके लिए सामने आए हैं। लड़ाई उत्तर भारत और दक्षिण भारत में भी हुई थी। सभी ने मिल कर भारत को आजाद कर एकता की मिसाल दी है। कार्यक्रम में कार्मिक विभाग के रामविलास रघुवंशी, शिरीष येलवनकर, सुषमा गौर, मणिलाल पाटिल, गिरीश झोपे, पद्मजा इत्यादि लोग उपस्थित थे।

नेपा लिमिटेड मे जनजातीय गौरव दिवस के शृंखलाबद्ध संवाद-परिसंवाद कार्यक्रम मे शामिल अधिकारी-कर्मचारी। • नईदुनिया

आदिवासी बलिदानियों के जीवन चरित्र पर परिसंवाद हुआ

नेपानगर. नेपा लिमिटेड में जनजातीय गौरव दिवस के तहत दूसरे दिन गुरुवार को भारत के आदिवासी बलिदानियों के जीवन चरित्र पर एक परिसंवाद हुआ। इस दौरान वरिष्ठ प्रबंधक कार्मिक व प्रशासन ज्ञानेश्वर खैरनार ने बताया भारत में कई आदिवासी समुदाय रहे हैं जिन्होंने अपने लोगों और क्षेत्र को बचाने और अंग्रेजों को वहां से भगाने के लिए विद्रोह किया। लेकिन इनके नाम गुमनामी में कहीं खो से गए हैं। जिन्हें याद किया जाना और आने वाली पीढ़ी के सामने रखना आवश्यक है। ये वो सेनानी थे जिन्होंने देश के लिए अपने आप को न्योछावर तक कर दिया है। विद्रोह 1857 का हो या स्वतंत्रता आंदोलन 1946 का कई सेनानी इसके लिए सामने आए हैं। लड़ाई उत्तर भारत में भी हुई लड़ाई दक्षिण भारत में भी सभी ने मिलजुल कर आखिरकार भारत को आजाद कराया। जन संपर्क अधिकारी संदीप ठाकरे ने बताया परिचर्चा में शहीद वीर नारायण सिंह, भगवान बिरसा मुंडा, अल्लूरी सीता राम राजू, रानी दुर्गावती, टंट्या मामा भील, शहीद भीमा नायक आदि वीर आदिवासी योद्धाओं के जीवन चरित्र और उनके द्वारा अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध चलाई गई क्रांति के विषय में संवाद परिसंवाद व प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम किया गया। इस दौरान कार्मिक विभाग के रामविलास रघुवंशी, शिरीष येलवनकर, सुषमा गौर, मणिलाल पाटिल, गिरीश झोपे, पद्मजा आदि मौजूद थे।